अरुणाचल प्रदेश के आदी जनजातीय लोकगीतों में अभिव्यक्त सामाजिक जीवन

बनश्री पर्तिन

लोक साहित्य पर जब भी हम विचार करते हैं, तो सर्वप्रथम लोकगीत का नाम आता है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि यह जनजीवन में अपनी प्रचुरता एवं व्यापकता के कारण लोकसाहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय शाखा है। लोकगीत मनुष्य के विकास की गाथा है। समाज के हरेक पहलू का निदर्शन लोकगीतों के माध्यम से बड़ी ही सरलता से हो जाता है। लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें सहज स्वाभाविकता एवं सरलता होती है। इनमें सुख-दुख, प्रेम- करुणा आदि के विविध रंग समाए हुए होते हैं। लोक का समस्त जीवन लोकगीतों के माध्यम से ही हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है। शिशु के प्रथम क्रन्दन से लेकर मृत्यु तक के सारे भावचित्र इनमें दिखाई देते हैं। जो स्वतः उद्भूत होते हैं वही लोकगीत हैं। इनमें कोई कृत्रिमता का आभास तक नही होता। आदी जनजातीय समाज में लोकगीतों की परंपरा सदियों से मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। जन्म से लेकर मृत्यु तक बहुत सारे संस्कारों का पालन आदी समाज प्रारंभिक समय से करता आ रहा है। जितने प्रकार के संस्कार निभाए जाते हैं, उतने ही प्रकार के उन संस्कारों से जुड़े लोकगीत भी गाये जाते हैं। लोकगीतों का गायन पर्वों एवं त्योहारों में सबसे अधिक किया जाता है।

अरुणाचल प्रदेश की छब्बीस प्रमुख जनजातियों में आदी जनजाति का भी नाम लिया जाता है। आदी जनजाति मुख्य रूप से सियाड़, अपर सियाड़, ईस्ट सियाड़, लोवर दिबांग वैली, लोहित आदि जिलों में निवास करती है। न्यीशी जनजाति के बाद दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाली जनजाति के रूप में आदी जनजाति का नाम आता है। आदी जनजातीय समाज पुरुष प्रधान समाज होता है। परिवार का मुखिया प्रायः पुरुष ही होता है। विभिन्न संस्कृतियों की धनी यह जनजाति लोक साहित्य के रूप में भी बहुत सारे खजानों को अपने में समेटे हुए है। आदी समाज में लोकगीत प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इनके जीवन में इन लोकगीतों का बहुत महत्व होता है। इन लोकगीतों के अभाव में कोई भी उत्सव या संस्कारादि पूर्ण नहीं माने जा सकते हैं। इन लोकगीतों में आदी समाज से जुड़े विविध पहलू, यथा- लोक-संस्कृति, लोकविश्वास, रीति-रिवाज, परंपराएँ आदि देखने को मिलते हैं। इन लोकगीतों में आदी जनजीवन के प्रत्येक पक्ष के प्रत्यक्षतः दर्शन होते हैं। यहाँ आदी लोकगीतों के माध्यम से आदी जनजीवन जीवन से जुड़े कुछ आवश्यक पहलुओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा-

1. आदी लोकगीतों में चित्रित सामाजिक मूल्य-

आदी लोकगीतों में जनजीवन से जुड़े जीवन मूल्यों की स्पष्ट एवं सुंदर अभिव्यंजना हुई है। अपने रीति-रिवाजों, परंपराओं एवं संस्कृति के साथ-साथ ये अपने भीतर मानवीय मूल्यों को भी बचाकर रखे हुए हैं। उदाहरण के तौर पर एक आदी लोकगीत द्रष्टव्य है-

"कामपोलोक दोमाड़,

काजीने दिकमाड़

आरो दे आपि आड़े।"

इस लोकगीत का भाव कुछ इस प्रकार है- 'संसार में सुंदरता से किसी का भी पेट नहीं भरा है, न ही बदसूरती के कारण कोई मरता है। पेट भरने के लिए मेहनत की आवश्यकता होती है न कि सुंदरता की। सत्य तो यह है कि मन सुंदर हो, यही आवश्यक हैं।' वर्तमान संदर्भ में आधुनिकीकरण के चलते इस गीत का महत्व कुछ कम जरूर हो गया है। जो दिखता है वही बिकता है- यही आज का नारा है। आज की बाजारवादी स्थिति यही है कि जो सुंदर है, वही सब कुछ है। यह बात मूर्त और अमूर्त सभी चीजों पर लागू होती है। सुंदरता को लेकर सामाजिक मानदंड बदल गए हैं। आज के युग में वही सुंदर कहे जाते हैं, जो शारीरिक रूप से आकर्षक हों। बहुत सारे क्षेत्रों में शारीरिक रूप से सुंदर लोगों को ही प्राथमिकता दी जाती है। जैसे एक्टिंग, एड कम्पनी, सौंदर्य प्रतियोगिता, टी. वी. एंकरिंग जैसे बहुत सारे क्षेत्रों में शारीरिक सुंदरता ही पहली शर्त होती है। परंतु सच्चाई यही है कि शरीर की सुंदरता समय के साथ क्षीण हो जाती है, वहीं आत्मा की सुंदरता ताउम्र बनी रहती है।

एक और लोकगीत है जिसमें समय की महता को दर्शाया गया है। उचित समय में कार्य को करने वाला ही जीवन में आगे बढ़ता है, यही इसका मूल भाव है। समय किसी के लिए नहीं रुकता है और न ही समय को कोई मात दे पाया है। घड़ी की सुई जैसे-जैसे आगे सरकत्ती है, उसी गति से इंसान की आयु भी आगे बढ़ती है। मनुष्य अपनी उम्र को बढ़ने से न रोक सकते हैं और न ही अपनी मृत्यु को ही टाल सकते हैं। निम्नलिखित आदी लोकगीत में इस भाव को देख सकते हैं-

"मिजिड़े एजोअ मोनबोम दुड़, बेदाड़े दुक्गे को कामाड़।

लाक्के दानेम कासुतो मिमुमे, पूमूअ बितबोम दुड़।

लाक्बिक दानेम कासुतो यामेये, एरागे राकबोम दुड़।"

प्रस्तुत लोकगीत का भाव कुछ इस प्रकार है- 'बुढ़ापा अपने आगोश में पकड़ने हेतु मनुष्य को भगा रहा है, परंतु उससे दूर भागने के लिए रास्ते दिखाई नहीं पड़ रहा है।

बायीं तरफ देखो तो नवयुवतियों की बाढ़ सी आ रही है और दायीं तरफ देखो तो नवयुवकों का भूस्खलन सा ढहता हुआ दिखाई दे रहा है। अर्थात बुढ़ापे को टालना हर हाल में संभव नहीं है। अपने ही आंखों से जिन्हें छोटे शिशु के रूप मे देखा था, वहीं अब जवान नवयुवक तथा नवयुवती के रूप में हमारे समक्ष खड़े

हैं। आयु का बढ़ना प्राकृतिक प्रक्रिया है, जिसे टाला नहीं जा सकता। इसलिए समय रहते कार्य को करने मे ही जीवन की सार्थकता निहित है।'

2. आदी लोकगीतों में चित्रित आर्थिक जीवन-

विश्व के सभी समाजों में प्रायः सामाजिक असमानता देखने को मिलती है। सामाजिक असमानता से यहाँ तात्पर्य आर्थिक असमानता से है। आदी समाज में भी यह आर्थिक असमानता देखने को मिलती है, जो लोकगीतों के द्वारा हमारे समक्ष प्रस्तुत होती है। वर्तमान मे आर्थिक असमानता एक विकराल दैत्य की तरह अपने पाँव पसारे खड़ी है। आदी समाज में अमीरी और गरीबी के बीच की जो खाई है, उसे पाटना शायद कभी संभव ही न हो। अमीर इतने अमीर होते हैं कि गोदाम में बहुतायत मे रखे हुए अनाज तितली में परिवर्तित हो जाते है। अर्थात कुछ लोगों के पास इतना अनाज होता है कि तीन-चार सालों में भी खत्म नहीं होता है। वहीं कुछ लोग इतने गरीब होते हैं कि भोजन बनाने के लिए टिन के डब्बे से जब चावल निकालते हैं तो इतनी सावधानी बरतते हैं कि खाली डब्बे की आवाज लोगों को सुनाई न पड़े। आदी लोकगीत में एक लड़की अपनी और उनकी सहेली की इसी आर्थिक असमानता का वर्णन कर रही है-

"मामोअ दोरजी मामोअ, आड़ड़ इत्रीम लुक्केप को ओम्बी।

आड़ड़ केदेम गेनाये, मुरकोड़म गेनाये, मिरेम औमे केदेम।

इक्के देम गेनाये, ओपान ओमे के देम बीरी तीतुम गेनाये।"

प्रस्तुत लोकगीत का भाव कुछ इस प्रकार है कि 'हे ! कपड़े सिलने वाली दर्जी काकी, मुझे और मेरी सहेली के कपड़ों में जेबें सिल दें। मेरी सहेली धनी घर की बेटी है, इसलिए वह उन जेबों में अपने धन को रखेगी। परंतु मैं निर्धन की बेटी हूँ, इसलिए अपनी जेबों में पीये हुए बीड़ी के टुकड़े को सहेजकर रखूँगी। क्योंकि निर्धन के लिए एक बीड़ी का टुकड़ा भी मूल्यवान ही होता है।' तुच्छ सी जूठी बीड़ी को भी सहेजकर रखने का यहाँ वर्णन किया गया है, आमतौर पर जिसको फेंका जाता है। छोटी-छोटी, अनावश्यक चीजों को भी समेटकर रखना गरीब व्यक्ति के ही लक्षण हैं। एक ओर आदी लोकगीत में इस आर्थिक असमानता का बहुत ही मार्मिक वर्णन देखने को मिलता है, जो इस प्रकार है-

"गे आड़ड़ बुलुके कोगेम काबोड़ तोनामे,

मिरेमे कोगेम काबोड़ तोनामे, लेकु बारबाड़ कुप्तेम- कुप्लेम ।

हो.............होई............।

आड़ड़ ड़ेलुके ओपाने कोगेम काबोड़े तोनामे ओसुगे ओरूगे कुप्तेम कुप्लेम।

हो.............होई............।"

भाव कुछ इस प्रकार है- 'आदी घर बाँस से निर्मित होते हैं जो चबूतरे पर बने होते हैं, इन बाँस से बने घरों के झरोंखे से घर के भीतर रोशनी पहुँचती है। प्रस्तुत लोकगीत में एक मित्र इन्हीं झरोखों से जब अपने धनवान मित्र के घर के नीचे झाँककर देखता है, तो बहुमूल्य धातुओं से बने बर्तन एवं अन्य बहुमूल्य सामान एक के ऊपर एक पड़े हुए दिखाई देते हैं वहीं गरीब मित्र अपने घर के नीचे जब झाँककर देखता है तो पुराने तोको के पत्ते, जिनका उपयोग भोजन खाने वाले थाल के रूप में करते हैं, एक के ऊपर एक बिखरे पड़े हैं।' अर्थात अमीरों के यहाँ बहुमूल्य वस्तुएँ और गरीबों के यहाँ बेकार चीजें पड़ी हुई होती हैं, जिनका कोई मोल नहीं। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि आदी समाज में बहुमूल्य वस्तुओं को घर के नीचे जमीन मे गाड़कर रखने की प्रथा है, जो कि अमीरों के घरों में ही पाई जाती है।

3. प्रकृति से संबंधित गीतों में लोकजीवन-

मनुष्य एवं प्रकृति का संबंध जन्म-जन्मांतर का होता है। संसार के सभी प्राणी प्रकृति से ही जन्मे हैं। हर ऋतु में खुद को ढालना मनुष्य का स्वभाव है। अलग-अलग ऋतुओं के साथ मनुष्य की संवेदना जुड़ी हुई होती है। विभिन्न ऋतुओं में उससे जुड़े हृदय के उद्गार लोकगीत के माध्यम से प्रकट होते हैं। बदलती ऋतुओं के साथ-साथ अलग-अलग धुनों पर विभिन्न प्रकार के गीत होठों पर अनायास ही आ जाते हैं। आदी जनजाति के लोग सदा से प्रकृति-पूजक और प्रकृति- प्रेमी रहे हैं। इनके जीवन का आधार ही प्रकृति है। इसी कारण प्रकृति से जुड़े बहुत सारे लोकगीत आदी में पाये जाते हैं। यहाँ वर्षा ऋतु से संबंधित एक आदी लोकगीत द्रष्टव्य है-

"लोबो दोदिड़, रोगो पित्चाप पिल्लाप,

ऐमे देम मुतकितो दोरमाड़।"

भाव यह है कि बारिश के दिनों में जब अत्यधिक वर्षा हो रही होती है, तो मनुष्य को अत्यधिक तकलीफों का सामना करना पड़ता है। परंतु जो अन्य पशु-पक्षी...

नाने कापदा कापदा गोयेड़ गोयेड़, यायी रीदा रीदा गोयेड़ गोयेड़

यायी ड़ोजी गोयेड़ गोयेड़, आदी तेलो गोयेड़ गोयेड़

यायी मे गोयेड़ गोयेड़, आदी पेजीए गोयेड़ गोयेड़

पेतेक तोनामे गोयेड़ गोयेड़, यायी कापदा कापदा गोयेड़ गोयेड़

नाने रीदा रीदा गोयेड़ गोयेड़, आड़ड़ नो दोयी तोतेक नो दोयी

तोड़ड़ नो दोयी तोतेक नो दोयी, कोजुमे बोगुए दुलेड़ को तेलो।"

इस लोकगीत में जो भावार्थ है वह इस प्रकार है- 'एक बार एक पहाड़ी दंपति घूमने हेतु मैदानी इलाके में जाते हैं। वहाँ घूमते-घूमते अनजाने में पत्नी का हाथ गलती से बिच्छू बूटी को छू लेता है। फिर जलन

और खुजली के मारे वह जोर-जोर से रोने लगती है। उनकी पीड़ा को देखकर पति भी उनके साथ जोर-जोर से रोने लगता है। फिर दोनों दंपति पहाड़ों पर चले जाते हैं, लेकिन अबकी बार वहाँ पति के शरीर में बिच्छू बूटी का स्पर्श लग जाता है और वह जोर-जोर से रोने लगता है। फिर इस दर्द को महसूस कर चुकी पत्नी भी उसके साथ जोर-जोर से रोने लगती है। बिच्छू बूटी के लगने से दोनों का रोना यहाँ हास्यास्पद भी लगता है। परंतु ये भी सच है कि बिच्छू बूटी के स्पर्श से जो पीड़ा होती है वह असहनीय होती है।

4. बालगीतों में चित्रित सामाजिक जीवन-

बालकों से जुड़े हुए गीतों को ही हम बाल गीत कहते हैं। इस प्रकार के गीतों में बाल मनोविज्ञान, बाल-व्यवहार, बाल चेष्टाएँ आदि विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। बच्चे खेलते समय या पर्व-त्योहारों में इन गीतों को गाकर खुशी से झूम उठते हैं। माता-पिता अपने बच्चों को इस प्रकार आनंदित देखकर फूले नहीं समाते। बच्चे बिना अर्थ की गहराइयों में जाये जो मन में आता है, उसको गाते जाते हैं। परिणामस्वरूप इस प्रकार के कुछ गीत अर्थ युक्त होते हैं तो कुछ अर्थहीन। एक लोकगीत द्रष्टव्य है-

"ओ योयोलो ओ ओई,

आसी तापा पायोड़े पायोड़,

गे राको रामोती।"

आसी तापा का अर्थ आदी बोली में 'कद्दू' होता है। इस बालगीत का कोई विशेष अर्थ तो नही है, पर यह अवश्य ध्यान देने योग्य है कि मातृत्व गुण लड़कियों में स्वभाविक रुप से होता है। छोटी-छोटी लड़कियाँ कद्दू के फल को बच्चे की तरह पीठ पर लादकर खेल-खेल में इस गीत को गाती हैं। गुड्डे-गुड़ियों के रूप में बाँस या लकड़ी से बनी हुई गुड़ियाँ, जंगली फूल-पत्ते एवं फलों से ही बच्चे खेलते थे।

बच्चे बहुत ही भोले और नादान होते हैं। वे प्रायः सपनों की दुनिया में गोते लगाते हैं। कभी काल्पनिक भूत-प्रेतों की बातें करते हैं तो कभी जादुई शक्तियों पर विश्वास कर लेते हैं। इसी भोलेपन के साथ एक अन्य गीत में बच्चे चन्द्रमा से सुई की माँग कर रहे हैं। पूरा गीत संवाद शैली में गाया जाता है-

"पोलोअ कोलो पेसी को कोलो,

पेसी देम कापे इयेनेदा? पेसी देम अच्गोन ओमनाये,

अच्गोन देम कापे इयेनेदा ? अच्गोन देम आबाल मेकेनाये,

आबाल देम कापे इयेनेदा? आबाल देम सीता को रेनाये,

सीता देम कापे इयेनेदा ? सीता देम तानी आमोड़ काड़ड़ नाये।"

इस गीत के भाव कुछ इस प्रकार हैं- बच्चे चन्द्रमा से विनती करते हैं कि हे! चन्द्रमा, मुझे एक सुई प्रदान करें। चन्द्रमा के पूछने पर कि तुम सुई का क्या करोगे ? बच्चे उत्तर देते हुए कहते हैं कि हम उस सुई से

एक थैली सीएंगे। फिर चन्द्रमा पूछते हैं कि तुम उस थैली का क्या करोगे ? बच्चे उत्तर में कहते हैं कि हम थैली में धन रखेंगे। चन्द्रमा फिर पूछते हैं कि धन का क्या करोगे ? बच्चे उत्तर देते हुए कहते हैं कि धन से हम एक हाथी खरीदेंगे और जब चन्द्रमा पूछते हैं कि हाथी का क्या करोगे तो अंत में बच्चे कहते हैं कि हाथी से पूरी दुनिया की सैर करेंगे। इस प्रकार चन्द्रमा एक-एक कर प्रश्न पूछते जाते हैं और बच्चे उसका उत्तर देते जाते हैं। इसी प्रकार का एक बालगीत असमिया में भी पाया जाता है, जो इस प्रकार है-

"जोनबाई ए बेजी एटि दिया।

बेजीनो केलै? मोना सिबलै ।

मोना नो केलै? धन भराबलै।

धन नो केलै ? हाती किनिबलै।

हाती नो केलै ?

हातीत उठि पानीराम घरलै याय,

आलिबाटर मानुहे घूरि धूरि चाय।"

निष्कर्षतः आदी लोकगीतों में जीवन की विविध झलकियाँ दिखाई देती हैं। आदी लोकगीत बहुत ही समृद्ध हैं। विभिन्न अवसरों पर उनसे जुड़े अलग-अलग गीत गाये जाने की परंपरा आदी समाज में दिखाई देती है। आवश्यकता है, तो बस इन्हें लिपिबद्ध करने की। वैसे भी बढ़ते आधुनिकीकरण के चलते धीरे-धीरे यह लुप्त होने की स्थिति में हैं। आज की युवा पीढ़ी लोकगीतों के बदले फिल्मी धुनों पर थिरकना अधिक पसंद करती है। मोबाइल, इंटरनेट, टेलीविजन आदि के जमन में बच्चे भी खेलकूद एवं त्योहारों में कम दिलचस्पी रखते हैं। इसलिए लोकगीतों का संकलन और लिपिकरण करना बहुत ही ज्यादा आवश्यक हो गया है, तभी इनके अस्तित्व को बचाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. लोकगीतों के संदर्भ और आयाम- डॉ. शान्ति जैन

2. लोक साहित्य की भूमिका- डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय

3. लोकसाहित्य के प्रतिमान- डॉ. कुन्दन लाल उप्रेती

4. आदी फॉक सोंग्स- आदुक तायेड़

5. मिलन रानी जामतिया, कॉकबराक कविता : एक अंतरयात्रा- (साभार : समन्वय पूर्वोत्तर)